उपसंहार

आधुनिक हिंदी काव्य में रहस्यवाद का संबंध छायावादी काव्यान्दोलन से रहा है। रहस्यवाद शब्द हिंदी साहित्य में 'Mysticism' का रूपान्तर के रूप में मिलता है | रहस्य का अंग्रेजी शब्द 'Mystery' है। जिसका सामान्य अर्थ है - छिपी हुई बात, गुप्त बात या अज्ञात। रहस्य का मूल संस्कृत 'रहस' शब्द है, इसका अर्थ है - एकांत, भेद की बात । रहस्य के विचार पक्ष को हम रहस्यवाद और अनुभूति पक्ष को रहस्यानुभूति कह सकते है। बांग्ला में रहस्यवाद के लिए 'मरमीभाव' या 'मरमियावाद' शब्द का प्रयोग मिलता है। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार, "हिंदी साहित्य में रहस्यवाद शब्द का प्रयोग 1920 ई. से पहले नहीं दिखाई पड़ता है। जब मुकुटधर पाण्डेय, सुमित्रानंदन पंत, जयशंकर प्रसाद की नवीन कविताएँ प्रकाश में आयीं तो उनकी आलोचना - प्रत्यालोचना के सिलसिले में रहस्यवाद शब्द का प्रयोग किया गया। कवीन्द्र रवीन्द्र की अंग्रेजी 'गीतांजलि' को देशी विदेशी आलोचकों ने 'मिस्टिक' कहा था, इसलिए हिंदी में भी उस तरह की कविताओं को 'मिस्टिक' और उसमें निहित भावधारा को 'मिस्टिसिज्म' समझकर उनके लिए हिंदी शब्द रहस्यवाद चलाया गया|"[1] छायावाद का प्रमुख वस्तुगत तत्त्व 'रहस्यवाद' है, जो रवीन्द्रनाथ के काव्य विशेषकर 'गीतांजलि' की कविताओं में उपलब्ध है। भारतीय परम्परा में जिसका मूल तत्त्व 'वेद' और उपनिषद में प्राप्त है।

प्राचीन काल से होते हुए हिंदी काव्य में रहस्यवाद की लम्बी परम्परा रही हैं । आधुनिक काल के छायावाद में इसका स्पष्ट स्वरूप उभरकर आता है। छायावादियों में महादेवी ने इसे अपनी काव्य साधना के रूप में स्वीकार लिया। इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देते हुए बंगला के रवीन्द्रनाथ अग्रसर हुए, जिन्होंने 'गीतांजलि' के दर्शन में अद्वैतभाव को भावात्मक स्तर पर प्रस्तुत करते हुए आधुनिक भारतीय काव्य में रहस्यवाद का परिचय कराया।

हिंदी छायावाद के प्रमुख चार स्तम्भ- जयशंकर प्रसाद (1890-1937 ई.), सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला (1897-1961 ई.), सुमित्रानंदन पंत (1900-1977 ई.), एवं महादेवी वर्मा (1907-1987 ई.), ये सभी रचनाकार रवीन्द्र साहित्य से परिचित थे। कवयित्री महादेवी ने अपनी सृजन - यात्रा - पथ के साथी के रूप में जिन्हें स्वीकृति दी है उनमें प्रथम नाम आया हैं, रवीन्द्रनाथ ठाकुर का। अपनी संस्मरण कृति 'पथ के साथी' में प्रथम प्रणाम रवीन्द्रनाथ ठाकुर को उन्होंने निवेदित किया हैं। 1933 ई. में प्रयाग में रवीन्द्रनाथ से मुलाकात, इसी वर्ष कलकत्ता में आयोजित जापानी कवि यौन नागूची के स्वागत समारोह में महादेवी ने भाग लिया और वहीँ से शान्तिनिकेतन जाकर रवीन्द्रनाथ से भेंट की। सृजन के क्षेत्र में प्रभाव और प्रेरणा की बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इससे मौलिकता बाधित नहीं होती बल्कि उसकी मूल्यवत्ता और बढ़ जाती है। रवीन्द्रनाथ के महाप्रयाण (1941 ई.) पर रचित महादेवी वर्मा की 'रवीन्द्र के महाप्रस्थान पर' शीर्षक कविता रवीन्द्रनाथ के प्रति महादेवी का श्रद्धार्ध - निवेदन हैं। कवयित्री महादेवी रवीन्द्रनाथ से और बांग्ला काव्य से परिचित थी। इसलिए काफी संभावना है दोनों के काव्य में, रहस्यवाद में, साम्य और वैषम्य है।

भारत का श्रेष्ठ साहित्यिक सम्मान ज्ञानपीठ (1983) प्राप्त महादेवी को प्रायः उनकी रहस्यानुभूति के लिए जाना जाता हैं और वही रहस्यानुभूति उपनिषदों और मध्यकालीन संत कवियों के प्रभाववश हमें रवीन्द्रनाथ ठाकुर में भी मिलती हैं। हिंदी में जैसे छायावादी कवयित्री के रूप में वर्मा जी प्रसिद्ध रही हैं ठीक वैसे ही बंग्ला साहित्य, भारतीय साहित्य और विश्व साहित्य के क्षेत्र में अपना कीर्तिमान स्थापित करने वाले नोबेल (1913) पुरस्कार प्राप्त रवीन्द्रनाथ की व्यापकता, महानता किसी व्याख्या की अपेक्षा नहीं रखती।

रहस्यवाद की परम्परा काफी पुरानी है। इसी क्रम में साहित्य में रहस्यवाद के स्वरूप में नवीनता का समाविष्ट होना स्वाभाविक है। आधुनिक

नवजागरण काल में कई मनीषियों के द्वारा वेदांत दर्शन की नई व्याख्या दी गई। जिनमें दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद, अरविन्द, रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि रहे हैं। इस काल में पुराने सिद्धांतो को कोरा सिद्धांत न मानकर उसकी नई व्याख्या प्रस्तुत हुई। इसे अधिक व्यवहारिक बनाया गया। साहित्य के क्षेत्र में भी सहज ही ये बात उभरकर आती है, रहस्यवाद के क्षेत्र में नई व्याख्याओं और प्रयोगों के आधार पर नव्य रहस्यवाद का प्रचलन हुआ। नव्य रहस्यवाद पर विवेकानंद के वेदांत दर्शन का प्रभाव था जिसमें कर्मवाद के साथ मानवीय प्रेम, सेवा, बलिदान के महत्त्व की प्रधानता रही | स्वामी विवेकानंद द्वारा प्रसारित इस व्यवहारिक वेदांत दर्शन के आलोक में मानवतावाद की स्थापना हुई | उन्होंने समाज के नव निर्माण के लिए ब्रह्म एवं जीव की एकता के आधार पर मानवीय एकता की साधना की | इसी मानवीय दर्शन की पृष्ठभूमि का प्रभाव रवीन्द्रनाथ और महादेवी की रहस्यवादी कविताओं में भी दिखलाई पड़ता हैं| |

प्रणय या रहस्यानुभूति अलौकिक प्रियतम या असीम सत्ता से संबंधित है, उस प्रियतम का प्रत्यक्ष महादेवी और कवि रवीन्द्र ने नहीं किया किन्तु दार्शनिक चिंतन या तत्त्वबोध के द्वारा उनकी अनुभूति प्राप्त की | उसका स्वरुप सर्वत्र अद्वैतवाद के अनुरूप है इसलिए उनकी रहस्यानुभूति का मूलाधार ब्रह्म से अद्वैतभाव की है | इसी ब्रहम या अलौकिक प्रियतम को जानने, समझने की जिज्ञासा अति प्राचीन है और यह जिज्ञासा, रहस्यवाद का प्रथम सोपान है। उस अज्ञात, असीम का स्पंदन दोनों के ह्रदय में अनुभव होता हैं। जो इस सृष्टि को बार - बार बनाता और मिटाता रहता है। महादेवी जहाँ उस अलौकिक प्रियतम के लिए विरह वेदना को वरन् करती हैं वहीँ प्रकृति में उस अरूप के होने का आभास कवि को व्याकुल कर देता हैं, तभी वे कह उठते हैं, “के तुमि गहिछो गान आकाश - मंडले।”[2]

महादेवी अलौकिक प्रियतम से एकाकार की स्थिति में द्वैत के महत्त्व को भी स्वीकार करती हैं और उनके ह्रदय में परमतत्व के प्रति अद्वैत का आभास भी हैं। दूसरी ओर रवीन्द्रनाथ का मानना हैं कि, अद्वैत ही लीला के कारण द्वैत हो जाता हैं। 'गीतांजलि' काव्य संग्रह में वे कहते हैं, सीमा के बीच भी तुम असीम हो। तुम्हारा ही प्रकाश मेरे और इस जगत के अन्दर समाहित हैं -

"सीमार माझे असीम तुमि, बाजाउ आपन सुर,
आमार माझे तोमार प्रकाश, ताई एतो मधुर।"[3]

महादेवी और रवीन्द्रनाथ के रहस्यवादी कविताओं में वेदांत का अद्वैतभाव , सर्वात्मवाद, दुखवाद के प्रभाव के साथ रहस्यवाद के विभिन्न सोपानो को देखा गया हैं।

विश्व - प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य में छायावादी कवयित्री महादेवी और रवीन्द्रनाथ ने असीमानंद की अनुभूति की हैं। उस रहस्यमयी सत्ता की लीला को प्रत्यक्ष रूप में प्राकृतिक प्रतीकों के माध्यम से अनुभव किया हैं। उनका मानना हैं कि, ब्रह्म विश्व में प्रकृति के माध्यम से ही प्रकट होते हैं। इसलिए जीव और ब्रह्म की मिलन साधना, वियोग व्यथा, आत्मसमर्पण का आनंद और सात्विक प्रेम की भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम प्रकृति ही हैं। 'नीलाम्बरा' की भूमिका में महादेवी स्वयं कहती हैं, "प्रकृति मानव के करण अर्थात इन्द्रियों द्वारा प्राप्त रूप - रस - गंध स्पर्श - ध्वनि का विषय भी है और उस उपलब्धि से उत्पन्न अनुमान, कल्पना, आस्था, विचार, सौन्दर्यबोध, जिज्ञासा आदि का कारण भी। मनुष्य चेतना की विभिन्न वृतियों के अनुसार उसकी दृष्टि प्रकृति के संग में भी विविध हो गई है। कभी उसकी दृष्टि विषयपरक है, कभी देवत्व और रहस्यमूलक।"[4] अर्थात प्रकृति चित्रण में दोनों की काव्य प्रतिभा सार्थक एवं चरितार्थ होती रही हैं।

महादेवी का प्रिय अलौकिक सत्ता हैं जिसका कोई स्पष्ट स्वरूप नहीं, फिर भी वे अपने प्रिय से मिलन का अनुभव बार - बार करती हैं। रश्मि की निम्न पंक्तियों में महादेवी अपने प्रिय के स्वरूप को प्रकृति में अनुभव करती है। प्रकृति के माध्यम से उन्हें अपने अलौकिक प्रियतम के साथ एकाकार की अनुभूति होती हैं -

"सुरभि बन जो थपकियां देता मुझे,
नींद के उच्छवास सा, वह कौन है ?"[5]

दूसरी ओर कवि रवीन्द्र विश्व प्रकृति के मध्य अपने प्रियतम की खोज करते हैं। उनकी संवेदना अपने अराध्य से एकाकार के लिए व्याकुल हैं। उस असीम की अनुभूति को उन्होंने प्रकृति से अलग होकर नहीं पाना चाहा है। यही कारण है कि जीवन के हर स्तर पर प्रकृति का संवेदनात्मक रूप उन्हें प्रेरित करता हैं। 'गीतांजलि' की इन पंक्तियों में कवि के इस रहस्य को समझा जा सकता हैं -

"फुलेर मतन आपनि फुटाओ गान,
हे आमार नाथ, एई तो तोमार दान।"[6]

अतः जड़ और चेतन में एक ही सत्ता की अनुभूति में दोनों ने नदी, चन्द्र, नक्षत्र, पर्वत, आकाश, पुष्प, आदि में उस विराट और असीम सौन्दर्य को ग्रहण किया हैं।

भावात्मक रहस्यवाद का अर्थ होता है, रहस्यमयी अलौकिक सत्ता के साथ विभिन्न प्रकार की भावनाएँ। महादेवी और रवीन्द्रनाथ की रहस्यवादी काव्य में प्रणय भाव किसी लौकिक व्यक्ति से नहीं बल्कि अलौकिक ब्रह्म के प्रति है। उनके प्रणय का आधार स्थूल- रूप - सौन्दर्य न होकर सूक्ष्म विचार एवं विश्वास है। वैयक्तिक सुख दुख की सीमा को पार कर जब आत्मा दुख वेदना के

द्वारा भी सुख और हर्ष का अनुभव करने लगता है तभी ..... भावात्मक रहस्यवाद का चरम उत्कर्ष काव्य में आता है। भावात्मक रहस्यवाद के चित्र प्रस्तुत करने वाले कवि में लौकिक सुख - दुख को अलौकिक में लीन करने की क्षमता होना अनिवार्य है। अर्थात इस दृष्टिकोण से महादेवी और रवीन्द्रनाथ की रहस्यवादी कविताएँ विचार, सत्य और दर्शन पर आधारित होते हुए भी भावात्मकता से परिपूर्ण हैं।

महादेवी वर्मा के गीतों में लौकिकता की तलाश हो अथवा अलौकिकता की, उनके गीतों में मिलने वाली वेदना स्वाभाविक है। उनके गीतों में क्रंदन और रुदन का जो सम देखा जाता है, उसका कारण महादेवी का आध्यात्मिक प्रेम है। उनके काव्य में एक ओर गहन वेदना है तो दूसरी ओर आशामय जीवन। रवीन्द्रनाथ जीवन सत्य से परिचित होकर परमात्मा को विविध रूपों में, जीवन के सुख - दुःख - कर्म - अवसान में आने का आमंत्रण देते हैं। रहस्यवादी साधक की एक विशेषता होती है कि, वह सुख - दुख दोनों ही स्थितियों में उस मर्म तत्व को ही देखता हैं -

"तुमि नव नव रुपे एसो प्राणे,
एसो दुःखे सुखे, एसो मर्मे,
एसो नित नित सव कर्मे ;
एसो सकल - कर्मे अवसाने"[7]

इस प्रकार ब्रह्म को सर्वत्र मानकर व्यापक रूप की अनुभूति एवं उसके प्रति प्रणय बंधन का भाव दोनों के रहस्यवादी काव्य में व्यक्त हुआ हैं। अतः महादेवी और रवीन्द्रनाथ के भाव पक्ष में कहीं साधक के अश्रु, वेदना, करुणा के साथ असीम आनंद की अनुभूति भी हैं। उनके भाव पक्ष में कहीं भी अहंकार, हिंसा, पशुता और व्यभिचार के लिए कोई स्थान नहीं है।

महादेवी और रवीन्द्रनाथ के काव्य में धर्म, दर्शन और साधना संबंधी रहस्यवादी कविताएँ अद्वैतात्मक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की विभिन्न प्रणालियाँ मात्र है, मूल रूप से सभी एक है। महादेवी और रवीन्द्रनाथ का काव्य, कवि - दर्शन की उच्च भूमि पर स्थापित है 19वीं शताब्दी में बंगाल के नवजागरण के साथ तत्कालीन भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और पारिवारिक परिवेश की पृष्ठभूमि का बहुत बड़ा योगदान रवीन्द्रनाथ और महादेवी के व्यक्तित्व और उनके आध्यात्मिक जीवन दर्शन पर रहा। महादेवी के जीवन दर्शन और काव्य पर मूल रूप से वेदांत का अद्वैतवाद, बौद्ध दर्शन का दुखवाद और माँ के साहचर्य में मध्यकालीन भक्त कवियों से परिचय और प्रभाव उनके जीवन और साहित्यिक दर्शन पर पड़ा। दूसरी ओर रवीन्द्रनाथ को उपनिषद के अद्वैतभाव ,आनंदवाद के साथ वैष्णवों के लीलावाद और बाउलों एवं संतों की सार्वजनीन सहज साधना ने विशेष रूप से आकर्षित किया था।

धर्म का अर्थ होता है, धारण करना। अर्थात मनुष्य जिसको धारण करता है, वह उसका धर्म बन जाता है। महादेवी और रवीन्द्रनाथ के समग्र दर्शन में मध्यकालीन भक्त कवियों और बौद्धों के महकरुणा के साथ उपनिषद के अद्वैतवाद, जिस पर विवेकानंद के द्वारा दी गई वेदांत की नयी व्याख्या, जिसमें - मानवीय प्रेम, सेवा और बलिदान के साथ कर्मवाद के महत्व का प्रभाव रहा हैं। इन्हीं मानवीय धर्मों को ताउम्र महादेवी और रवीन्द्रनाथ ने ओढ़े रखा, जो उनके दर्शन और साधना का महत्वपूर्ण अंग बनकर विकसित हुआ। रवीन्द्रनाथ मानव - धर्म की चर्चा करते हुए कहते हैं कि, यह जगत स्वार्थपरक होने के लिए नहीं है। जगत का धर्म परमार्थ है और इस नियम से मनुष्य का सर्वोत्कृष्ट धर्म दूसरों के लिए आत्मोत्सर्ग करना है।

महादेवी के काव्य दर्शन में अद्वैवादी विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट है। महादेवी स्वयं ही 'रहस्यवाद' शीर्षक निबंध में कहती हैं, "रहस्यवाद में जो प्रवृतियाँ मिलती हैं, उन सब के मूल रूप हमें उपनिषदों की विचारधारा में मिल

जाते हैं। रहस्यभावना के लिए द्वैत की स्थिति भी आवश्यक है और अद्वैत का आभास भी, क्योंकि एक के अभाव में विरह की अनुभूति असंभव हो जाती है और दूसरे के बिना मिलन की इच्छा आधार खो देती है।"[8] छान्दोग्य उपनिषद के 'एकोहं बहुस्यामः' में महादेवी के इसी दर्शन की झलक मिलती है। रवीन्द्रनाथ भी अपने परमात्मा को विश्व के बीच ही अनुभव करते है। रवीन्द्रनाथ परमात्मा के साथ एकत्व को भी अनुभव करते हैं और द्वैत की स्थिति का आभास भी उन्हें हैं -

"एहे प्राणेर भरा माटिर भीतरे
कत जुग मोरा जेपेंछी,
कत शरतेर सोनार आलोके कत दिन दोंहे केपेंछी।"[9]

हिंदी का जो विकास भारतेंदु युग से हुआ, उसे काव्य के सिंघासन पर स्थापित करने श्रेय छायावादियों को जाता हैं। महादेवी संस्कृत की अध्यापिका रही हैं अतः हिंदी भाषा के उद्भव और विकास संबंधी अच्छी जानकारी रखती थी। दूसरी ओर रवीन्द्रनाथ बंगला भाषा के स्वभाव और प्रकृति के अच्छे जानकर थे। इसका परिचय उनके द्वारा लिखित निबंध 'बंग्ला भाषा परिचय' से मिलता है। नित्यप्रयोजनीय भाषा और साहित्यिक भाषा के अंतर को दोनों जानते थे। अतः शब्द चयन, शब्द निर्माण आदि को ध्यान में रखते हुए, अपने युग में प्रचलित भाषा रूप को दोनों ने न केवल अपनाया बल्कि संप्रेषणीयता को ध्यान में रखते हुए यथोचित परिवर्तन और प्रयोग किया। दोनों में अलंकर के प्रति कोई खास मोह नहीं था फिर भी उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, श्लेष आदि पारंपरिक अलंकारिक स्वरूप को अपनाते हुए मानवीकरण, विशेषण - विपर्यय जैसे नए अलंकारों का प्रयोग किया हैं। शब्द - चित्र के अंकन में दोनों बेजोड़ रहे हैं। प्रतीक एवं रूपक के प्रयोग में नवीनता का प्रदर्शन किया है। बिम्ब के विविध रूप जैसे - श्रव्य, ध्यान, दृश्य आदि का यथोचित प्रयोग किया है। छंद काव्य को लयात्मक बनाता है। इसका प्रयोग अभिव्यक्ति के अनुकूल

किया गया है। कुल मिलकर दोनों ही अपनी रहस्यवादी कविताओं में भाषिक अभिव्यंजना के प्रति जागरूक रहें हैं।

काल नित्य और असीम है। देशकाल अखंड है। अगर देशकाल अखंड है तो रहस्य क्या अभिन्न होगा ? रहस्य का मूल रूप एक हो सकता है, किन्तु नये - नये अविष्कार और हमारी आवश्यकता अनुसार एवं प्रयोग के कारण परिवर्तन परिलक्षित होते है, जैसे - प्रेम, प्रेम होता है किन्तु उसके इजहार के तरीके में परिवर्तन आया है। वे देखने में नए है किन्तु उनका आतंरिक रूप एक है। इसी क्रम में समय के साथ रहस्यवादी भाव के प्रयोग में भी परिवर्तन होना स्वाभाविक है। अतः भविष्य में रहस्य को जानने समझने की संभावना निरंतर बनी रहेंगी।

इस प्रकार शोध - कार्य के निष्कर्ष स्वरूप यह स्पष्ट होता है कि, महादेवी और रवीन्द्रनाथ दोनों ही रहस्यवादी साधक हैं, दोनों ही अलौकिक सत्ता के प्रति जिज्ञासु रहे हैं। हिंदी क्षेत्र की महादेवी और बांग्ला क्षेत्र से रवीन्द्रनाथ के बीच भाषाई और क्षेत्रीय अंतर होने पर भी, मूल तत्व रहस्य की अनुभूति दोनों में एक हैं। कालगत अंतर के बावजूद विशेषकर महादेवी रवीन्द्रनाथ से परिचित और प्रभावित रही है। दोनों में रहस्यभावना होने पर भी महादेवी की रहस्यभावना में व्यवहारिकता अधिक और रवीन्द्रनाथ में भावुकता की मात्रा ज्यादा है। महादेवी खुद को एक आवरण में बाँध कर रखती है जबकि रवीन्द्रनाथ आवश्यकतानुसार खुल जाते है। महादेवी की रहस्यभावना पर बौद्ध धर्म,अद्वैतदर्शन, मध्यकालीन भक्त कवियों का प्रभाव दिखता हैं। वहीँ रवीन्द्र पर उपनिषद, बाउल - बैष्णव और ब्रह्मसमाज का प्रभाव था। भाषा के स्तर पर महादेवी में बिम्बात्मकता अधिक है दूसरी ओर रवीन्द्रनाथ में इसकी मात्रा कम है। इन सब के बावजूद दोनों की समस्त रहस्यवादी कविताओं के मूल में मानवतावादी दृष्टिकोण की ही प्रधानता हैं।

संदर्भ ग्रंथ - सूची :

1. आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृतियाँ, नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण- 2015, पृ०- 38
2. संचयिता, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विश्वभारती ग्रंथम विभाग, बंगाब्द-1418, पृ०- 528
3. संचयिता, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्रकाशक- शुभम, कोलकाता, 2011, पृ०-372
4. महादेवी साहित्य (खण्ड- एक), सं०- निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण-2007, पृ०- 432
5. वही, पृ०- 113
6. रवीन्द्र रचनावली (खण्ड-6), विश्वभारती ग्रंथम विभाग, कोलकाता, बंगाब्द- 1417, पृ०- 65
7. वही, पृ०- 16
8. महादेवी साहित्य (खण्ड- चार), सं०- निर्मला जैन, पृ०- 424
9. रवीन्द्र रचनावली (खण्ड- 14), रवीन्द्रनाथ ठाकुर, पृ०- 140